शिक्षा के सरोकार-5

आधार-पत्र

विद्यालयी शिक्षा में कला व शारीरिक शिक्षा

आवश्यकता, वर्तमान परिस्थितियाँ, सम्भावनाएँ व चुनौतियाँ

शैक्षिक संगोष्ठी, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, भोपाल

कला शिक्षा व शारीरिक शिक्षा को हमेशा से ही शिक्षा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा माना जाता रहा है। नीति एवं वैचारिक दस्तावेज़ों में भी रेखांकित किया जाता रहा है कि खेल व कला के सभी पहलू, बौद्धिक विकास एवं औपचारिक विषयों की अवधारणाओं की समझ के विकास में महती भूमिका अदा करते हैं। यह भी कि समाजीकरण की प्रक्रिया एवं भावनात्मक और संवेदनात्मक विकास में भी कला व खेलकूद की अहम भूमिका है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* (एनसीएफ) 2005 और *कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच* पर पोजीशन पेपर, दोनों ही दस्तावेज़, कला व कला-एकीकृत शिक्षा की वकालत करते हैं। ये दोनों दस्तावेज़ संगीत, नृत्य, दृश्य कला और थिएटर को एक अनिवार्य हिस्से (दसवीं कक्षा तक) के रूप में स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल करने पर ज़ोर देते हैं। इसी तरह, शिक्षा में खेलों को एकीकृत करने की हिमायत करते हुए *राष्ट्रीय खेल नीति 2001* खेलों एवं शारीरिक शिक्षा को शैक्षिक पाठ्यक्रम के साथ मिलाने तथा इसे सेकेण्डरी स्कूल तक शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाने और इसे विद्यार्थी की मूल्यांकन पद्धति में सम्मिलित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

किन्तु वास्तविक स्कूली परिस्थितियों में ज्ञान के इन दोनों हिस्सों के प्रति उदासीनता ही दिखाई देती है। स्कूली शिक्षा में भी चन्द विषयों को ही मुख्य माना जाता है और इन पर ही विशेष ज़ोर दिया जाता है। इन विषयों में बच्चों की उपलब्धियों को जाँचने के लिए मासिक परीक्षण और वार्षिक परीक्षाओं सहित पूरे वर्ष मूल्यांकन के लिए एक औपचारिक प्रक्रिया होती है। चूँकि कला और खेल शिक्षा में अंकों द्वारा मूल्यांकन करना पूरी तरह सम्भव नहीं होता है और उनकी प्रकृति के मद्देनज़र, न ही इस तरह का मूल्यांकन इन विषयों में बच्चों की उपलब्धता को सही से दर्शा

सकता है इसलिए न तो शिक्षक, न ही विद्यार्थी और न ही उनके अभिभावक यहाँ तक कि स्कूल भी इसे गम्भीरता से नहीं लेते हैं। इसी के चलते इन पर न संसाधन, न समय कुछ भी निवेश नहीं किया जाता है। दस्तावेज़ों व यथार्थ के बीच इतना बड़ा अन्तर निश्चय ही चिन्ता व मंथन का विषय है। मौजूदा परिप्रेक्ष्य में कला और खेलकूद की स्कूली शिक्षा में जगह के मुद्दे पर विचार और संवाद और भी महत्त्वपूर्ण इसलिए हो जाता है क्योंकि *नई शिक्षा नीति 2020* ने इसे अपनी वैचारिक समझ का प्रमुख हिस्सा माना है, और इसके महत्त्व को स्वीकार करते हुए यह नीति शिक्षा में भारतीय कलाओं, खेलकूद और संस्कृति को बढ़ावा देने पर ज़ोर देती है।

खेलकूद बच्चों के शारीरिक विकास और समाजीकरण की प्रक्रिया का शुरू से ही बहुत महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है। बच्चे खुद भी इस तरह की गतिविधियों को अपने आप करते रहते हैं और इस दौरान वे बहुत कुछ सीखते भी हैं। लेकिन स्कूलों में बच्चों की इस खेलकूद की समझ और खेलकूद के जरिये विकसित अन्य समझ को आगे की दिशा में ले जाने के कोई सोचे-समझे प्रयास नहीं किए जाते। हालाँकि शारीरिक विकास के अभ्यासों को अपने आप में अच्छे स्वास्थ्य, अनुशासन व शारीरिक क्षमता के विकास के लिए भी महत्त्वपूर्ण माना जाता रहा है। और इस वज़ह से यदा-कदा विभिन्न तरह के व्यायाम, परेड का अभ्यास जैसी कुछेक गतिविधियाँ होती रहती हैं। किन्तु जैसा कि पहले ज़िक्र आया है एक व्यवस्थित सोच के तहत इन गतिविधियों को स्कूल का हिस्सा मानना, इन पर समय लगाना, यह नहीं होता। साथ ही, स्कूलों में जो होता है उसका नज़रिया दस्तावेज़ों में वर्णित नज़रिए की कल्पना से बहुत दूर है। इस विषय के प्रति दृष्टिकोण का अभाव भी स्कूलों में साफ़ दिखता है और इसीलिए खेलकूद की मौजूदा प्रक्रियाओं में, उन तत्वों का तो नितान्त अभाव भी दिखता है जो समाजीकरण के साथ-साथ, सहयोग व हार-जीत को सहजता से स्वीकारने के लिए तैयार करता हो। जहाँ यह थोड़ा बहुत स्कूल में दिखता भी है वहाँ भी अक्सर खेलकूद सिर्फ प्रतियोगिता के लिए टीम तैयार करने के रूप में ही दिखाई देता है।

कला के सन्दर्भ में बात करें तो किसी चीज़ में सुन्दरता को देख पाना, उसे सराहना इंसानी संस्कृति और समाज का एक अभिन्न और आवश्यक पहलू है। यह पेंटिंग, ड्राइंग, शिल्प, संगीत, थिएटर, खेल, नृत्य, कविता, कहानी कहने, फ़िल्म और छवियों जैसे प्रतीकात्मक और अनुभवात्मक रूपों में व्यक्त होता है। कला शिक्षा के यह सभी रूप विद्यार्थियों को समाज और संस्कृति के बहुत-से पहलुओं से सहजता से रूबरू होने में काफ़ी मददगार हो सकते हैं। सांस्कृतिक विरासत से परिचय, उसके प्रति सम्मान और सराहना, विविधता का एहसास और उसकी सराहना यह सब करने में सक्षम करते हुए कला शिक्षा, शिक्षा और संस्कृति के बीच सम्बन्धों को मज़बूत करती है। यह बच्चों को उनके समाज और पर्यावरण के करीब लाने, अपने आसपास को ध्यान से देखने, समझने महसूस करने और फिर उसे अपने नज़रिये से वर्णित करने में भी मददगार होती है।

कला शिक्षा के इन अनेक पहलुओं से बच्चों का परिचय करवाना, उनकी इनमें रुचि पैदा करना व इनमें सक्षमता हासिल करने को भी बहुत-से स्कूली कार्यक्रमों में जगह दी जाती रही है। अमूमन पाठ्यक्रम भी होते हैं और टाईम-टेबल में भी उनके लिए जगह होती है। जैसे सभी प्राथमिक शालाओं में चित्रकला के लिए कुछ समय व कहीं-कहीं संगीत के लिए भी कुछ समय रखा जाता है। किन्तु इन कक्षाओं में भी अधिकांशतः स्वयं की अभिव्यक्ति के स्थान पर बनी-बनाई चीज़ों की नकल करने का ही काम करवाया जाता है। उच्च प्राथमिक कक्षाओं तक आते-आते ऐसा प्रतीत होता है कि कला शिक्षण के लिए निर्धारित समय को बिल्कुल भी गम्भीरता से नहीं लिया जाता। माध्यमिक स्तर पर कला शिक्षा व शारीरिक शिक्षा दोनों से ज़्यादा महत्त्व विषय शिक्षण व उसमें अच्छे अंक प्राप्त करने की तैयारी में लगता प्रतीत होता है।

कला व खेल शिक्षा अक्सर स्कूलों में कुछ निर्धारित तिथियों और कुछ निर्धारित प्रतियोगिताओं के लिए आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों तक सीमित हो जाती है। इन कार्यक्रमों में प्रदर्शन करने के लिए तैयारी भी करवाई जाती है। किन्तु यह तैयारी कुछेक चुनिन्दा बच्चों की ही करवाई जाती है जो इन कार्यक्रमों में अपनी प्रस्तुति देंगे।

खेलकूद के सन्दर्भ में भी स्कूलों में कालखण्ड निर्धारित होते हैं लेकिन इन कालखण्डों में क्या होगा और क्यों होगा यह स्पष्ट नहीं होता। अमूमन किसी विषय को अतिरिक्त कक्षा की आवश्यकता हो तो खेलकूद का यह कालखण्ड मिल जाता है, कुल मिलाकर खेलकूद का यह कालांश एक खाली कालांश की तरह ही उपयोग होता है। बच्चों को व्यवस्थित रूप से खेलकूद में अथवा शारीरिक व्यायाम की सार्थक प्रक्रिया में शामिल करने की कोई तैयारी नहीं होती। स्कूलों में सभी बच्चों के खेल पाने के लिए मैदान अथवा सामग्री भी सुनिश्चित करना असम्भव ही होता है। विभिन्न सरकारी योजनाओं में व फ़ीस के निर्धारित ढाँचों में कला व शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता के मद्देनज़र कुछ-न-कुछ प्रावधान किया जाता है, परन्तु सभी बच्चों को इस तरह की गतिविधियों में नियमित रूप से शामिल करने के लिए प्रयास नहीं किया जाता।

कला शिक्षा और खेलकूद की इन गतिविधियों के सार्थक रूप से स्कूल में सम्भव न हो पाने की राह में एक बड़ी रुकावट ऐसे शिक्षकों की तैयारी है जो शारीरिक शिक्षा, खेलकूद अथवा कला शिक्षण के लिए तैयार किए गए हों। हालाँकि शारीरिक शिक्षक के लिए काग़ज़ों पर प्रावधान है किन्तु सरकारी स्कूल हो अथवा प्राइवेट, शारीरिक शिक्षा के लिए अधिकांश स्कूलों में नियुक्तियाँ नहीं की जातीं। जिन माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शालाओं में शारीरिक शिक्षक होते भी हैं वहाँ उनका सबसे प्रमुख कार्य बड़े बच्चों को अनुशासन में रखना ही समझा जाता है। कुछ स्कूलों में उनकी

ज़िम्मेदारी टूर्नामेंट के लिए कुछ टीमों को तैयार करना व उनमें भाग लेने के लिए व्यवस्था करना, जिसमें अक्सर उनके साथ जाना शामिल है, आदि ही होती हैं। शारीरिक शिक्षक की ज़िम्मेदारियाँ, स्कूल नेतृत्व व स्कूल व्यवस्था की उनसे अपेक्षाएँ भी उनकी भूमिका को संकीर्ण ही नहीं वरन् अलग ही दिशा में मोड़ देती प्रतीत होती हैं।

सामान्य स्कूलों व कक्षाओं में चित्रकला, हस्तकला व संगीत आदि के लिए तो कोई स्थान ही नहीं है। सिर्फ़ उन उच्च माध्यमिक शालाओं में जहाँ चित्रकला, संगीत जैसे विषय उच्च माध्यमिक स्तर तक पढ़ाए जाते हैं वहाँ इन विषयों के शिक्षक मिल जाते हैं। अन्य स्कूलों व कक्षाओं में बच्चों को इस तरह के पहलुओं से परिचय करवाने व उनकी रुचि व शुरुआती क्षमता विकसित करवाने के लिए संसाधन और शिक्षकों की उपलब्धता नहीं होती है।

चूँकि नीति दस्तावेज़ों में कला, संगीत, खेलकूद व शारीरिक शिक्षा को पूर्ण शिक्षा का हिस्सा ही माना गया है व उन्हें पाठ्यचर्या से इतर गतिविधि कहने पर एतराज़ जताया है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि हर विषय पढ़ाने वाले शिक्षक की इस तरह के मसलों व क्षमता में रुचि पर बच्चों के साथ कार्य करने की तैयारी होनी ही चाहिए। दस्तावेज़ों में रेखांकित किए गए ये बिन्दु क्रियान्वित हो पाएँ इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभागों में भावी शिक्षकों की इस तरह की तैयारी की कोई सम्भावना नहीं दिखती।

इनमें भी शारीरिक शिक्षा, चित्रकला, दस्तकारी, संगीत आदि सिखाने के लिए भी नियमित व्यक्ति और नियमित व्यवस्थित समय का अभाव है। शिक्षक तैयारी के सम्पूर्ण कार्यक्रम में इनके लिए हर क्षेत्र में अभाव है चाहे वह सामग्री के स्तर पर हो, उपयुक्त स्थान के स्तर पर हो, तैयारी करवाने वाले शिक्षक के स्तर पर हो, निर्धारित कालखण्ड के स्तर पर हो, आकलन में इसके स्थान को लेकर हो या फिर नियुक्ति प्रक्रिया में इस तरह की क्षमताओं पर दिए जाने वाले महत्त्व को लेकर हो। कुल मिलाकर यहाँ भी इन सन्दर्भों पर गम्भीरता का अति अभाव कचोटता है। यह सोचा जाना चाहिए की नीति दस्तावेज़ों में व शैक्षिक शोध में इन्हें इतना महत्त्वपूर्ण स्थान दिए जाने के बावजूद हर स्तर पर इनके प्रति उदासीनता क्यों है। क्या इसके कारण ढाँचागत हैं, सांस्कृतिक हैं या फिर कोई और ही बात है। यह देखना भी महत्त्वपूर्ण है कि इनके बारे में क्या कुछ किया जा सकता है और कैसे।

हम यह भी जानते हैं कि चित्रकला, हस्तशिल्प, नाटक, संगीत और नृत्य आदि का उपयोग समग्रता में शिक्षा का आवश्यक हिस्सा तो माना ही गया है और इस दिशा में बहुत से प्रयोग भी हुए हैं। यह जानना महत्त्वपूर्ण होगा कि यह प्रयोग किस सन्दर्भ में हुए, इनमें क्या प्रयास हुए, किस हद

तक इनमें सफलता मिली, इनके मुख्य सिद्धान्त, कार्य करने के ढंग क्या थे, इनसे किस तरह के अनुभव मिले, कहाँ तक यह आदर्श लक्ष्य की ओर बढ़ पाए, इनकी राह में किस तरह की अड़चनें आईं और आख़िर यह धीरे-धीरे बदलते व सिमटते क्यों गए? इनका महत्त्व व इन पर दिया गया ध्यान कमतर क्यों होता गया? इसके अलावा यह भी ज्ञात है कि कला के सभी पहलुओं को विषय शिक्षण के साथ टुकड़ों-टुकड़ों में जोड़ने के भी बहुत-से प्रयास हुए हैं। यह प्रयास प्राथमिक स्तर पर अधिक, किन्तु यदा-कदा उच्च प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर पर भी विषय शिक्षकों द्वारा अथवा उनके सहयोग व भागीदारी से किए गए हैं। यह समझना महत्त्वपूर्ण होगा कि यह कैसे और कहाँ सम्भव हो पाए, किन कक्षाओं व किन विषयों में हो पाए, इनके नतीजे क्या रहे, क्या इन्हें व्यापक किया जा सकता है, कैसे? उनके लिए किस प्रकार की परिस्थितियाँ चाहिए।

कला शिक्षा व खेल शिक्षा के महत्त्व को जानने, विभिन्न दस्तावेज़ों में इनके महत्त्व को रेखांकित किए जाने के बावजूद भी स्कूलों में चाहे वह प्राथमिक स्तर पर हो या उच्च प्राथमिक स्तर पर, स्थितियों में ख़ास बदलाव नहीं हुआ है। कला और खेल शिक्षा के महत्त्व के विस्तार और क्षेत्र के बारे में अभी भी भ्रम की स्थिति बनी हुई है। क्या कला और खेल को पाठ्यचर्या के साथ एक पद्धति के रूप में समावेशित किया जाए या इसे पाठ्यचर्या के एक अलग क्षेत्र के रूप में होना चाहिए। कला और खेल की शिक्षा सामान्य शिक्षकों द्वारा दी जाए या केवल कला व खेल शिक्षकों द्वारा? क्या कला और खेल का मूल्यांकन किया जा सकता है, यदि हाँ तो कैसे? कला और खेल क्रियाकलापों के लिए सामग्री कैसे प्राप्त की जा सकती है? यदि शिक्षक स्वयं एक कलाकार या खिलाड़ी नहीं है तो वह कला और खेल की शिक्षा कैसे दे सकता है? यदि एक शिक्षक विषयों को पढ़ाते हुए खेल, चार्ट, पेंटिंग, मॉडल आदि का उपयोग करता है तो क्या इसे कला समेकित अधिगम का हिस्सा माना जा सकता है।

शारीरिक शिक्षा, खेलकूद व कला शिक्षा की स्कूल में जगह पर मंथन की महती आवश्यकता है। यह समझने व विचार करने की आवश्यकता है कि यह क्यों महत्त्वपूर्ण है, नीति दस्तावेज़ इनके बारे में क्या कहते हैं, स्कूलों व शिक्षा व्यवस्था के अन्य हिस्सों में इसका क्या स्थान है व आज इसकी स्थिति क्या है, इन्हें शामिल करने के लिए किस-किस तरह के व्यवस्थित अथवा प्रयोगात्मक छोटे-छोटे प्रयास हुए हैं, इन सबके क्या अनुभव रहे हैं व इनके आलोक में आगे बढ़ने का क्या रास्ता हो सकता है व इनके ज़्यादा गम्भीरता से शामिल होने में प्रमुख अड़चनें किस प्रकार की हैं (आर्थिक हैं, व्यवस्थागत हैं, सामाजिक हैं, सांस्कृतिक हैं आदि-आदि)।

यह संगोष्ठी इन सभी मसलों के इर्द-गिर्द संवाद को बढ़ावा देने के लिए है।

कुछ उपविषय जो इस सन्दर्भ में हो सकते हैं :

अ. स्कूली शिक्षा में कला/ सौन्दर्यशास्त्र के आयामों की मौजूदगी ...क्यों ?

1. स्कूलों में खेल व कला शिक्षा : दस्तावेज़ों में उनके प्रति दृष्टिकोण व उसका विकास/ कला और खेल शिक्षा - परिप्रेक्ष्य
2. इंसान के विकास और गहराई से सीखने में कला और खेल शिक्षा का योगदान
3. ज्ञान के एक हिस्से के रूप में कला और खेलकूद व शारीरिक शिक्षा
4. कला शिक्षा और खेल शिक्षा के सन्दर्भ में हुए प्रयोग
5. कला शिक्षा और खेल शिक्षा की मौजूदा स्थिति व सम्भावनाएँ
6. कला शिक्षा और खेलकूद : जेंडर, विशेष क्षमता वाले बच्चे, सभी की भागीदारी

आ. पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर कला और खेल शिक्षा

1. सभी विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति दिलचस्पी पैदा करने और उनके लिए शिक्षा को अर्थपूर्ण बनाने में इनकी भूमिका
2. पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक स्तर के लिए कला व खेल शिक्षा का दृष्टिकोण व स्वरूप
3. विषयों की चारदीवारी और कला शिक्षा व खेलकूद

इ. उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में कला और खेल

1. कला और खेल का अन्य विषयों के साथ समेकन/ अन्तर सम्बन्ध : नवाचार, प्रतिफल, चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ
   (अ) इस स्तर पर विषयों के शिक्षण में कला की जगह
   (ब) कला व खेलों और विषय शिक्षण से इनका जुड़ाव
2. कला और खेलकूद शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम निर्धारण : मौजूदा स्थिति, चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ
3. माध्यमिक स्तर के लिए कला व खेल शिक्षा का दृष्टिकोण व स्वरूप

ई. शिक्षक प्रशिक्षण : वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ, सम्भावनाएँ

1. कला शिक्षा व खेलकूद : शिक्षकों की तैयारी
2. सामान्य शिक्षा महाविद्यालयों में कला और खेल के लिए तैयारी की सम्भावनाओं का विश्लेषण
3. कला शिक्षा और खेलकूद : स्कूलों की तैयारी

संगोष्ठी में भाग लेने की प्रक्रिया

संगोष्ठी हिन्दी में होगी। प्रस्तुत किए जाने वाले आलेख हिन्दी भाषा में ही अपेक्षित हैं। संगोष्ठी में इनका प्रस्तुतिकरण और उन पर चर्चा भी हिन्दी में ही होगी।

संगोष्ठी में भाग लेने के लिए आपको अपने प्रस्तावित शोध आलेख का एक **'एब्स्ट्रैक्ट'** भेजना होगा। यहाँ 'एब्स्ट्रैक्ट' से आशय है कि आपके आलेख के मुख्य बिन्दु क्या होंगे, अपनी बात को पुख़्ता रूप से रखने के लिए आपके अवलोकन और तर्क की पुष्टि के लिए या ध्यान आकर्षित करने के लिए आप कौन-से साहित्य व शोध प्रविधि का सहारा लेंगे, और इन सबसे आप किन बातों की स्थापना करना चाहेंगे।

आप अपने प्रस्तावित पर्चे का एब्स्टैक्ट **15 जून, 2022** तक भेज सकते हैं। एब्स्ट्रैक्ट 500 से 800 शब्दों तक का हो सकता है। कृपया 'एब्स्ट्रैक्ट' के अन्त में अपना संक्षिप्त परिचय, इमेल, डाक का पता तथा फ़ोन नम्बर का उल्लेख अवश्य करें। जहाँ तक सम्भव हो 'एब्स्ट्रैक्ट' वर्ड फाइल में यूनीकोड में भेजें। साथ ही इस फाइल की एक पीडीएफ भी भेजें।

अपने एब्स्ट्रैक्ट seminar.artssportseducation@gmail.com पर भेजें।

एब्स्ट्रैक्ट प्राप्त होने पर संगोष्ठी की अकादमिक समिति उस पर विमर्श के बाद अपनी स्वीकृति ईमेल के माध्यम से आपको भेजेगी। एब्स्ट्रैक्ट स्वीकृत होने के बाद आप पूर्ण आलेख लिखना आरम्भ कर सकते हैं। पूर्ण आलेख भी उक्त ईमेल पते पर ही भेजा जाना है।

संगोष्ठी आयोजन सम्भावित तिथि : दिसम्बर,2022 / जनवरी,2023
आयोजन स्थल : भोपाल
एब्स्ट्रैक्ट भेजने की अन्तिम तिथि : 15 जून, 2022
पूर्ण आलेख भेजने की अन्तिम तिथि : 30 सितम्बर, 2022

और अधिक जानकारी के लिए दिए seminar.artssportseducation@gmail.com पर सम्पर्क कर सकते हैं।

परिशिष्ट

अब तक आयोजित संगोष्ठियों के बारे में...

- **पहली** संगोष्ठी 2017 में दिल्ली में *अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली* के साथ *'स्कूली शिक्षा के बदलते परिदृश्य में अध्यापन-कर्म की रूपरेखा'* विषय पर आयोजित की गई थी। इसमें प्रस्तुत पर्चों में से चयनित पर्चों के दो संकलन *(अध्यापक,अध्यापन और अध्यापक शिक्षा : नीतियाँ,बहसें और अनुभव* तथा *अध्यापन कर्म, अध्यापक की छवि व अस्मिता)* वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुए हैं।

- **दूसरी** संगोष्ठी 2018 में मोहाली में *भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान मोहाली* के साथ *'विज्ञान और विज्ञान शिक्षा'* विषय पर थी। संगोष्ठी में प्रस्तुत पर्चों में से चयनित पर्चों के दो संकलन वाणी प्रकाशन से प्रकाशित होने की प्रक्रिया में हैं।

- **तीसरी** संगोष्ठी 2019 में दिल्ली में *दिल्ली विश्वविद्यालय* के शिक्षा संकाय के साथ *'गणित शिक्षण : अपेक्षाएँ एवं चुनौतियाँ'* विषय पर आयोजित की गई थी। संगोष्ठी में प्रस्तुत पर्चों में से चयनित पर्चों का एक संकलन सम्पादन की प्रक्रिया में है।

- **चौथी** संगोष्ठी 2020 में *डिपार्टमेंट ऑफ़ टीचर ट्रेनिंग एण्ड नॉन फॉर्मल एजुकेशन (IASE), फैकल्टी ऑफ़ एजुकेशन, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली* के संयुक्त आयोजन में *'भाषा-शिक्षण, विचारशीलता और सृजनशीलता : विद्यालयी शिक्षा में भाषा और साहित्य का अध्यापन'* पर थी। इसका आयोजन वेबीनार के रूप में किया गया था। संगोष्ठी में प्रस्तुत पर्चों में से प्रकाशन हेतु पर्चों के चयन की प्रक्रिया जारी है।